P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

बदलते परिदृश्य में सामाजिक आंदोलनों में युवा वर्ग की भूमिका: एक विश्लेषण (निर्भया आंदोलन के विशेष संदर्भ में अध्ययन)

सारांश

परिवर्तन संसार का सार्वभौमिक नियम है, समय के साथ समाज के अन्तर्मुखी एवं बाहय ढ़ाचे में बदलाव आता है। जिसमें परिवर्तन प्राकृतिक रूप में अथवा जानबुझ कर लाया जाता है। जो मुख्य रूप से सामाजिक समस्या अथवा परिवर्तन हेतु किया जाता है जिसमें मुख्य उपकरण सामाजिक आन्दोलन होता है जिसे समाज के नागरिकों के सगठनों के द्वारा बहुतायत रूप से उपयोग किया जाता है। ऐसी ही एक समस्या के रूप में निर्भया आन्दोलन में नागरिक सगंठन के द्वारा निभाया गया। जिसके प्रमुख घटक के रूप में ''युवा वर्ग रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम शोद्यार्थी द्वारा निर्भया आन्दोलन में युवा वर्ग की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

मंजु सिंह
विभागाध्यक्ष,
समाजशास्त्र विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली, राजस्थान, भारत

सत्येन्द्र
असिस्टेंट प्रोफेसर,
समाज कार्य विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली, राजस्थान, भारत

मुख्य शब्द : निर्भया आन्दोलन, युवा वर्ग।

प्रस्तावना

परिवर्तन प्रकृति का नियम है एवं स्थिरता समाज की प्रकृति। वर्तमान समय में हमारे समाज में यह परिवर्तन अत्यंत तीव्र गति से एवं बहुमुंखी दिशाओं में हो रहा है। सामान्यतया परिवर्तन स्वतः आता है अथवा जान–बूझकर योजनाबद्ध रूप में लाया जाता है। जब योजनाबद्ध अथवा जान–बूझकर समाज की वर्तमान परिस्थिति में परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है, जो कि सामूहिक तौर पर व्यक्त किया गया व्यवहार होता है जिसमें नए परिवर्तन लाने तथा कभी–कभी नए परिवर्तनों का विरोध प्रकट करने हेतु व्यवहार प्रकट किया जाता है। जिसे बौद्विक जगत में सामाजिक आंदोलन की संज्ञा दी गई है। सामाजिक आंदोलनों का उद्देश्य सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में आमूल–चूल परिवर्तन लाना होता है। सामाजिक आंदोलनों की पृष्ठभूमि पर यदि प्रकाश डाला जाए तो विश्व पटल पर अन्य शताब्दियों की तुलना में 20वीं शताब्दी को आंदोलन की शताब्दी कहा जा सकता है। जहाँ एक ओर रूस और चीन में कई बड़ी क्रांतियाँ हुई वहीं इटली में फासीवाद एवं जर्मनी में नाजीवाद का उदय भी इसी शताब्दी में हुआ। इसके अतिरिक्त अनेक राष्ट्रों में भी साम्राज्यवाद से मुक्ति पाने एवं स्वतंत्र होने के लिए कई आंदोलन किए गए। इस प्रकार आधुनिक समाज अधिक चेतनशील एवं गतिशील होने के कारण परिवर्तन की ओर अधिक आकृष्ट दिखाई देते हैं। उपरोक्त तथ्यो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य रूप से इन आंदोलनों का प्रमुख उद्देश्य सत्ता में परिवर्तन लाना था।[1]

भारत भी इस प्रकार के आंदोलनों व परिवर्तन की प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा है। यहाँ ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, रामकृष्ण मिशन आदि के द्वारा अनेक स्तरों पर परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया। परन्तु भारत के संदर्भ में इन आंदोलनों को मूल्यांकित किया जाए तो इनका प्रमुख उद्देश्य धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन लाना था। वहीं मध्य प्रदेश की जनजातियों में हुए बिरसा आंदोलन, राजस्थान के भीलों में हुए भगत आंदोलन द्वारा जनजातियों के सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया। अंग्रेजी शासनकाल में भी राष्ट्रीय आंदोलनों ने भारत में राष्ट्रीय एकता का संचार किया। इन आंदोलनों में युवा वर्ग की भूमिका अहम रही थी।[2]

यहाँ तक की स्वतंत्रता आंदोलन में तो युवा वर्ग ने अति उत्साह का प्रदर्शन किया। अनेक युवाओं ने सरकारी नौकरियाँ छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में

भाग लिया, इनके युवाओं को फाँसी दे दी गई, वहीं लाखों की संख्या में जेल में डाल दिया गया। लेकिन इन्होंने लक्ष्यों को प्राप्त किए बिना आंदोलन को निरंतर जारी रखा गया। गाँधी जी के प्रेरणादायक आंदोलनों में युवाओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति में अहम योगदान दिया। गाँधी जी ने स्वयं भारत छोड़ों आंदोलन में देश के युवा वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवाओं के बिना देश को आजाद नहीं कराया जा सकता है, युवाओं को देश के काम आना चाहिए।"[3]

इसी श्रृंखला में, जून, 1974 में जयप्रकाश नारायण द्वारा बिहार से शुरू किया गया आंदोलन, जिसमें सरकार की तानाशाही एवं भ्रष्टाचार प्रमुख मुद्दा था, दिल्ली तक पहुँच गया था। इस आंदोलन में युवा वर्ग ने सबसे ज्यादा बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसलिए यह आंदोलन को 'युवा वर्ग आंदोलन' छात्र आंदोलन, इत्यादि के नाम से भी जाना जाता है।[4]

इसी प्रकार 2011 का अन्ना हजारे आंदोलन हो अथवा 2012 का निर्भया आंदोलन युवा वर्ग ने अहम भूमिका का निर्वाह किया। लोक पाल विधेयक अथवा अन्ना हजारे आंदोलन एवं निर्भया आंदोलन मुख्य रूप से दिल्ली में हुए। स्वतंत्रता आंदोलन, जयप्रकाश नारायण आंदोलन, अन्ना हजारे आंदोलन में युवा वर्ग को प्रेरित किया गया। किन्तु 'निर्भया आंदोलन' में इसके विपरीत था। उक्त आंदोलन पूर्ण रूप से 'स्व संचालित' था अर्थात् इसमें युवा वर्ग ने स्वयं बिना किसी नेतृत्व के भाग लिया। निर्भया आंदोलन पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि यह आंदोलन बदलते परिदृश्य में बिना किसी नेतृत्व, धन–सम्पदा के सम्पन्न हुआ। जिसके पीछे मात्र नकारात्मक सामाजिक प्रवृत्तियों से निजात पाना व सामाजिक व्यवस्था में तथा न्यायिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना था। उक्त सन्दर्भ में ध्यान देने हेतु तथ्य यह था कि इसमें आन्दोलन के परम्परागत स्वरूप को परिवर्तित कर दिया।

साहित्यावलोकन

उक्त तथ्यो के सन्दर्भ में उपलब्ध शोध पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो देसाई, घनागरे, टामब्रास (1960–1970) ने सामाजिक आंदोलन का विस्तृत से अध्ययन किया और सामाजिक आंदोलन को एक सशक्त माध्यम मानते हुए इसके माध्यम से महिला सशक्तिकरण, किसान, छात्र अपने अधिकारों एवं सत्ता पर दबावात्मक उपागम का प्रयोग करते है एवं वर्तमान परिस्थिति में बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। टॉमग्रास मानते हैं कि आंदोलन ही सत्ता एवं बाजार के अलावा तीसरा विकल्प पैदा करते हैं जिसमें अनेक संगठन जैसे–भारतीय किसान यूनियन एवं नेतृत्व को बनाने में अहम योगदान देते हैं।[6]

इसी प्रकार कौर, रतिदन्तर एवं चौधरी मैत्रीयी (2013) ने अपने शोध–पत्रों में मीडिया की निर्भया आंदोलन में भूमिका पर प्रकाश डालते हुए प्रिंट मीडिया की भूमिका पर विस्तृत वर्णन करते हैं। इन्होंने समाचार पत्रों की प्रथम पृष्ठ पर समाचार पत्रों के प्रकाशन के महत्व एवं इनका जनमानस पर प्रभाव का अध्ययन किया। समाचार पत्रों की सुर्खियों पर जब चाय की स्टॉल से संयुक्त राष्ट्र के मंच पर चर्चा होती है तो यह कहना समीचीन होगा कि समाचार पत्रों के द्वारा अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। इस प्रकार अपने अध्ययनों में इन्होंने निष्कर्ष दिया कि मीडिया ने निर्भया आंदोलन में सकारात्मक भूमिका का निर्वाह किया।[7]

गौतम, रिशी (2014) ने अपने अध्ययन में युवा वर्ग का अध्ययन किया (निर्भया आंदोलन के विशेष संदर्भ में) एंव निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि युवा वर्ग सोशल मीडिया के द्वारा प्रभावित हुए और इस आंदोलन से जुड़ने में फेसबुक, ट्वीटर, वाट्सअप इत्यादि की भूमिका अहम रही थी।

उपरोक्त साहित्य पुनरावलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक आंदोलन एवं निर्भया आंदोलन पर शोध अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभर रहा है परन्तु इनसे सम्बन्धित शोध साहित्य एंव शोध पत्र अधिकतर मीडिया एवं सामाजिक आंदोलन से से संबंधित हैं। परन्तु बदलते परिदृश्य में सामाजिक आंदोलन में युवा वर्ग की भूमिका पर उक्त अध्ययन हेतु एक नया विषय है।[8]

किसी भी शोध के कोई न कोई उद्देश्य आवश्यक होते हैं जिसके बिना कोई भी शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उद्देश्य का चयन किया गया हैं–

1. बदलते परिदृश्य में सामाजिक आंदोलन की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. निर्भया आंदोलन में युवा वर्ग की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध एंव विश्लेषण प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है तथ्य सकलन हेतु दिल्ली स्थित तीन विश्वविद्यालयों–जामिया मिलिया इस्लामिया, जवाहन लाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालयों से उक्त आन्दोलन में सामिल छात्रो का साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी ने स्नाबॅल पद्धति के माध्यम से दिल्ली सिथित तीन विश्वविद्यालयों–जामिया मिलिया इस्लामिया, जवाहन लाल नेहरू विश्वविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालयों से 74 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। जिनसे निर्भया आंदोलन में उनकी भूमिका से संबंधित तथ्यों को संकलित किया गया है। तथा तथ्यों को प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया है।

युवा वर्ग की सामाजिक आंदोलन में भूमिका

भारत में संसार के सबसे ज्यादा युवा निवास करते है। वर्तमान मे जहा एक तरफ संसार युवाओं की कमी से झूझ रहा हैं वही भारत के पास यह पूंजी के रूप में विद्धमान है भारत में युवा वर्ग अति उत्साहित एंव सक्रिय रहता है चाहे वो विकास का मुददा हो या भ्रष्ट्राचार का अथवा कोई सामाजिक समस्या, युवा वर्ग हर क्षेत्र में अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन में युवा वर्ग की भूमिका अहम थी वहीं जयप्रकाष नारायण आन्दोलन, अन्ना हजारे आन्दोलन तो युवा वर्ग पर ही निर्भर था। निर्भया आन्दोलन में भी युवा वर्ग ने अपनी भूमिका को प्रदर्षित किया। इससे पूर्व

अध्ययनों में यह स्थापित हो चुका है कि युवा वर्ग शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन के कारण आन्दोलनों में भाग लेते है जिसकी आयु वर्ग 16–21 वर्ष के बीच में होता है। (रेडडी, एवं दामले 1969,1971)

प्रस्तुत अध्ययन बदलते परिदृष्य में सामाजिक आन्दोंलनों में युवा वर्ग की भूमिका का एक विश्लेषण (निर्भया आन्दोलन के विशेष सन्दर्भ में अध्ययन) से सम्बन्धित है। जिसमें युवा वर्ग को आन्दोलन के प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया गया है। [10]

इसमें निर्भया आंदोलन में युवा वर्ग की भूमिका के बारे में भागीदारी का स्वरूप, घटना की जानकारी, किसकी प्रेरणा से भाग लिया, पुलिस प्रशासन की भूमिका, जस्टिस वर्मा कमेटी की रिपोर्ट इत्यादि पर तथ्यों का संग्रहण किया गया है तथा उनका विश्लेषण किया गया है।

निर्भया आंदोलन में भागीदारी के विषय में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया :

शोधार्थी के द्वारा निर्भया आंदोलन में उनकी भागीदारी के विषय में तथ्य प्राप्त किए कि उत्तरदाताओं ने किस प्रकार से आंदोलन में भाग लिया इस पर उत्तरदाताओं की निम्न प्रतिक्रिया रही।

सारणी संख्या–1

क्रसं	उत्तरदाताओं की भागीदारी	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	घटना प्रदर्शन में भाग	67	90.54
2	पोस्टर बनाना, फेसबुक के माध्यम से भाग लिया	07	09.46
	कुल	**74**	**100**

(**स्रोत**: फील्ड वर्क डेटा 2016–17)

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि निर्भया सामाजिक आंदोलन में धरना प्रदर्शन में भागीदारी वाले उत्तरदाताओं की 67 (90.54 प्रतिशत) थीं, वहीं दूसरी तरफ पोस्टर, फेसबुक एवं इस मुद्दे पर विश्वविद्यालय में होने वाली चर्चा में 07(9.46 प्रतिशत) ने भागीदारी की।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन में भाग लेने वाले उत्तरदाताओं में ज्यादातर ने घटना स्थल पर ही भाग लिया था।

निर्भया घटना की जानकारी के विषय में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया :

सारणी संख्या–2

क्रसं	घटना की जानकारी का स्रोत	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	समाचार पत्रों के माध्यम से	22	29.72
2	समाचार चैनल	19	25.68
3	सोशल मीडिया	28	37.83
	विश्वविद्यालय चर्चा	05	06.76
	कुल	**74**	**100**

(**स्रोत** : फील्ड वर्क डेटा 2016–17)

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं को निर्भया घटना के बारे में जानकारी 28 (37.83 प्रतिशत) को सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त हुई तथा 22 (29.72 प्रतिशत) उत्तरदाताओं समाचार पत्रों से वहीं 19 (25.68 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को जानकारी समाचार चैनलों के माध्यम से प्राप्त हुई। विश्वविद्यालय में होने वाली चर्चा से 05 (06.76 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को जानकारी प्राप्त हुई है।

आंदोलन हेतु प्रोत्साहित किए जाने के विषय में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

शोधार्थी द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया था कि किस प्रेरणा से युवा वर्ग आंदोलन से जुड़ा, जिसमें निम्न तथ्य पाए गए

सारणी संख्या–3

क्रसं	किसकी प्रेरणा से	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	स्वैच्छिक संगठन की प्रेरणा से	14	18.92
2	स्वप्रेरणा से	18	24.32
3	मित्रों की प्रेरणा से	42	56.76
	कुल	**74**	**100**

(**स्रोत** : फील्ड वर्क डेटा 2016–17)

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि निर्भया आंदोलन में भाग लेने वाले उत्तरदाताओं पर सबसे ज्यादा प्रभाव अपने मित्रों की प्रेरणा 42 (56.76 प्रतिशत) रही। वहीं 18 (24.32 प्रतिशत) के साथ स्वप्रेरणा से भाग लिया एवं 14 (18.92 प्रतिशत) ने स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से भाग लिया गया।

पुलिस एवं प्रशासन की भूमिका को लेकर उत्तरदाताओं की प्रतिकिया

जब भी कोई आंदोलन होता है तब सरकार के द्वारा उसे प्रशासन के माध्यम से दबाने का प्रयास किया जाता है, सरकार के पास पुलिस, सेना, प्रशासन प्रत्येक व्यवस्था मौजूद रहती है जबकि आंदोलनकारियों को केवल जनशक्ति, घटना, प्रदर्शन एक साधन के रूप में होते हैं। अतः जब भी आंदोलन होता है पुलिस एवं प्रशासन का रवैया सामान्यतः दमनकारी हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में निर्भया आंदोलन में आंदोलनकारियों के प्रति पुलिस एवं प्रशासन के रवैये की पड़ताल की गई और निम्न तथ्य प्राप्त किए गए–

सारणी संख्या–4

क्रसं	पुलिस एवं प्रशासन की भूमिका	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	दमनकारी	57	77.03
2	सहयोगात्मक	11	14.83
3	कुछ कह नहीं सकते हैं	06	08.10
	कुल	**74**	**100**

(**स्रोत** : फील्ड वर्क डेटा 2016–17)

प्रायः देखा जाता है कि जब भी आंदोलन होता है तो पुलिस प्रशासन का रवैया तानाशाही (दमनकारी) हो जाता है। निर्भया आंदोलन में भी ऐसा देखने को मिला। 57(77. 03 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि पुलिस का रवैया दमनकारी था। जबकि 11(14.87 प्रतिशत) ने सहयोगात्मक माना वहीं 06 (8.10 प्रतिशत) ने हाँ में और न ही ना में अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

मीडिया की भूमिका के बारे में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

मीडिया की निर्भया आंदोलन में अहम भूमिका रही थी, मीडिया को देश के चतुर्थ स्तम्भ के रूप में जाना जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में मीडिया की भूमिका का विश्लेषण शोधार्थी के द्वारा उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया के आधार पर किया गया है जो निम्नलिखित सारणी के द्वारा दर्शाया गया है

सारणी संख्या–5

क्रसं	कारण	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	मीडिया के तीनों स्वरूपों ने नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह किया	26	35.13
2	दिल्ली की घटना होने के कारण	43	58.11
3	महिला सुरक्षा को लेकर संवेदनशीलता	05	06.76
	कुल	**74**	**100**

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उक्त घटना में मीडिया की भूमिका के बारे में 43 (58.11 प्रतिशत) का मानना है कि निर्भया घटना दिल्ली की थी इसलिए मीडिया ने इतनी मजबूरी से पक्ष रखा। वहीं 26(35.13 प्रतिशत) का मानना है कि मीडिया के तीनों स्वरूप, प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। वहीं 5 (06.73 प्रतिशत) का मानना है कि महिला सुरक्षा को लेकर मीडिया संवेदनशील था।

जस्टिस वर्मा कमेटी की रिपोर्ट के बारे में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

निर्भया आंदोलन के प्रभाव को देखते हुए सरकार ने जस्टिस जे.एस. वर्मा कमेटी को गठित किया, जस्टिस जे.एस. वर्मा के द्वारा ही विशाखा गाइडलाइन में भी अहम योगदान रहा है। शोधार्थी के द्वारा उक्त की पड़ताल की गई।

सारणी संख्या–6

क्रसं	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	सकारात्मक	66	89.18
2	नकारात्मक	08	10.82
	कुल	**74**	**100**

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट हो रहा है कि युवा वर्ग 66 (89.18 प्रतिशत) जस्टिस वर्मा कमेटी को महिला सुरक्षा के लिए सकारात्मक बता रहा है, वहीं 08 (10.82 प्रतिशत) का मानना है कि इस प्रकार की रिपोर्ट से कुछ नहीं होने वाला है ऐसी रिपोर्ट पहले भी आई है।

महिला सुरक्षा के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया

सारणी संख्या–7

क्रसं	उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की आवृत्ति	प्रतिशत
1	राष्ट्रीय महिला हेल्प लाइन नं.	32	43.80
2	महिला सुरक्षाकर्मी संख्या बढ़ाना	23	32.08
3	सी.सी.टी.वी. कैमरा	18	24.32
	कुल	**74**	**100**

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि उत्तरदाता राष्ट्रीय महिला हैल्पलाइन नं. 32 (43.60 प्रतिशत) में सबसे ज्यादा है। वहीं सरकार को महिला सुरक्षाकर्मियों की संख्या के वृद्धि के पक्ष में 23 (32.08 प्रतिशत) तथा 18 (24.32 प्रतिशत) सी.सी.टी.वी. कैमरा की व्यवस्था के पक्ष में है।

निष्कर्ष

निर्भया आंदोलन मं युवा वर्ग की भूमिका अहम रही शोधार्थी के दृवारा तथ्यों के विष्लेषण करने से यह स्पष्ट हो रहा है कि युवा वर्ग ने 90: आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। इसी प्रकार निर्भया आन्दोलन में युवा वर्ग के दृवारा 60: से अधिक ने स्वप्रेरणा एवं मित्रों की प्रेरणा से इस आन्दोलन में भाग लिया। मीडिया की भूमिका भी बदलते परिदृष्य मं अहम रही जिसमें 26: युवा वर्ग तो की दिया की नेत्त्वकारी भूमिका को स्वीकार करते है तथा 43: का मानना है कि यह धरना दिल्ली में होने के कारण मीडिया की भूमिका सराहनीय रही। जस्टिस वर्मा कमेटी की रिपोर्ट को भी युवा वर्ग के द्वारा सकारात्मक बताया गया जिसमें 66% युवा वर्ग ऐसा मानते है।

वर्तमान में छात्रों में सामाजिक मुद्दों के प्रति सजगता एवं परिवर्तन समाज एवं देश के लिए सकारात्मक सकेत है।। इससे पहले युवा वर्ग फीस वृद्धि, विश्वविद्यालय प्रशासन इत्यादि में सक्रिय रहे हैं। हालांकि जयप्रकाश नारायण आंदोलन में युवा वर्ग की भूमिका अहम रही थी किन्तु स्वतंत्रता आंदोलन एवं जयप्रकाश नारायण आंदोलन में एक नेतृत्व जिसमें गांधी, जे.पी. थे। इसी प्रकार अन्ना हजारे आंदोलन में नेतृत्व अन्ना थे जो कि आंदोलनकर्ताओं के लिए एक सकारात्मक संकेत थे।

प्रस्तुत शोध पत्र बदले परिदृश्य में सामाजिक आंदालनों में युवा वर्ग की भूमिका (निर्भया आंदोलन के विशेष संदर्भ में) है, जहाँ कोई नेतृत्व नहीं था तथा युवा वर्ग के आंदोलन के पीछे मित्रमण्डली एवं स्वप्रेरणा को माना है। वहीं मीडिया ने जानकारी प्रदान की और स्वैच्छिक संगठनों ने सहयोगात्मक भूमिका का निर्वाह किया है। बदलते परिदृश्य में यह एक सकारात्मक प्रक्रिया है। वहीं देश के चौथे स्तम्भ के रूप में अपनी पहचान बना चुके मीडिया की भूमिका सकारात्मक रही और एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह किया जो आगे आने वाले दिनों में भी आशा की नई किरण जगाई है।

सरकार के लिए भी युवा वर्ग के सुझाव है कि एक राष्ट्रीय महिला हैल्प लाइन नम्बर जो कि पूरे राष्ट्र में समान हों तथा ज्यादा से ज्यादा महिला सुरक्षा के लिए

सी.सी.टी.वी. कैमरा की व्यवस्थ करें ताकि आगे निर्भया जैसी घटनाओं को रोका जा सके और महिला बिना किसी डर अथवा भय के देश के विकास में अपना योगदान दे सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, राजेन्द्र, सोशल मूवमेंटस ओल्ड एण्ड न्यू, करटीक्यू, आक्सफार्ड यूनिवसिटी प्रैस, 2001, पृ. 2754

सिंह, जयमेय जय, सिंह बी.एन., भारत में सामाजिक आंदोलन, रावत पब्लिकेशन हाउस, जयपुर, 2005, पृ. 47–81

जोसफ, अम्मू, शर्मा कल्पना, हूज न्यूज : द मीडिया एण्ड विमन इश्यू, सेज पब्लिकेशन, 1994, पृ. 56–71

कौर, रतिन्द्र, रिप्रेजेंटेशन ऑफ क्राइम अगेंस्ट विमन इन प्रिंट मीडिया ए केस स्टडी ऑफ दिल्ली गैंग रेप, एन्थ्रोप्रोलॉजी पब्लिकेशन, दिसम्बर, 2013, पृ. 39

गौतम, रिशी, रोल ऑफ सोश्यल मीडिया इन दिल्ली गैंग रेप, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, मार्च, 2014

शाह घनश्याम'' भारत में सामाजिक आन्दोलन'' सम्बन्धित साहित्य की एक समीक्षा, रावत पब्लिकेशन, जयपुर (राज.) 2009 अनुवादक– हरिकृष्ण रावत'